दसलक्षण महापर्व - उत्तम क्षमा

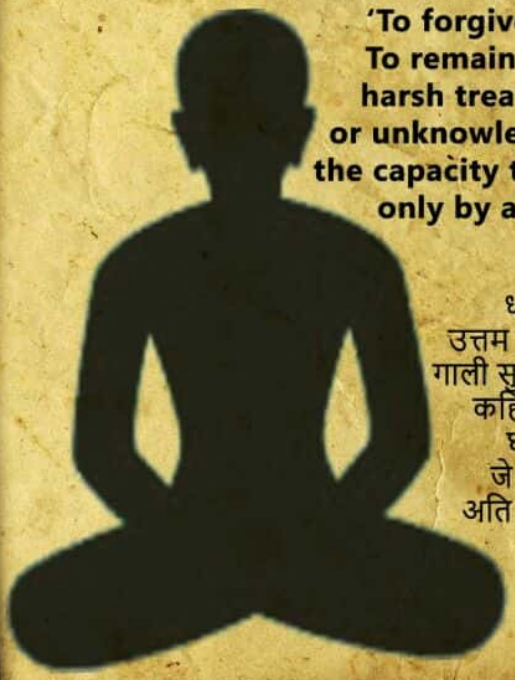

'To forgive' is the character of this Dharma. To remain fully calm & peaceful against the harsh treatment or being mocked by wicked or unknowledgeable persons even when there is the capacity to reply. Forgiveness can be practised only by a brave man and not by a coward.

पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहु विधी करै ।
धरिये छिमा विवेक, कोप ना कीजिये पीतमा ॥
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस पर भव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद ना आनो, गुन को औगुन कहे अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीने, बांध मार बहु विधि करै ।
घरतैं निकारे तन विदारै, बैर जो ना तहा धरै ॥
जे करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
अति क्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम मार्दव

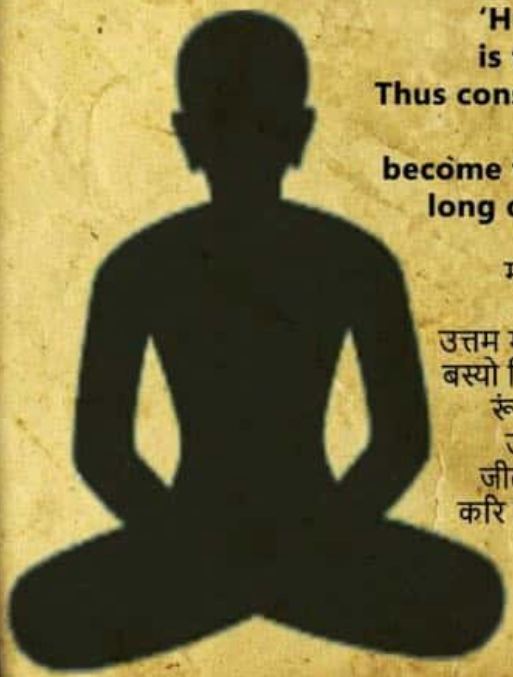

'Humility' or 'Not to be Proud'
is the character of this Dharma.
Thus considering all the worldly possessions
like a dream one,
become fully humble or modest to proceed
long on the eternal path of liberation.

मान महा विष रूप, करहि नीचगति जगत में ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना ।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूंकन भाग बिकाया ॥
रूंकन बिकाया भाग वशतै, देव इक इन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चान्डाल हूवा, भूप कीडों में गया ॥
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा ।
करि विनय बहु-गुन बडे जन की, ग्यान का पावै उदा ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम आर्जव

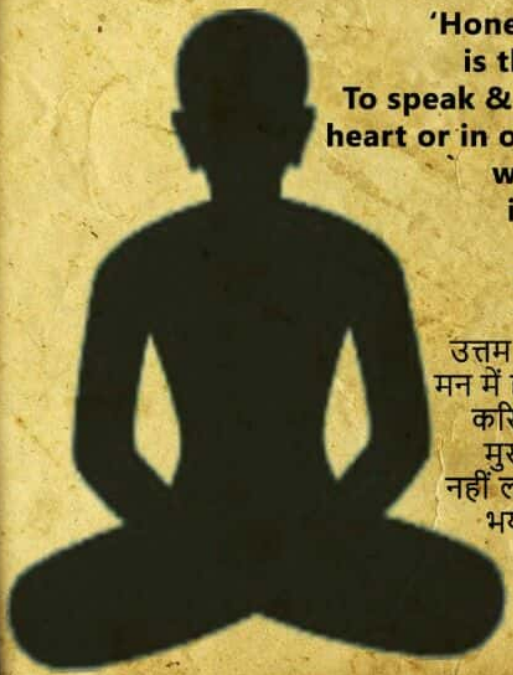

**'Honesty' or 'Straight-forwardness'
is the character of this Dharma.
To speak & behave just according to what is in
heart or in other words, not to deceive the other
with sweet (but false) talks
is called as Arjav Dharma.**

कपट ना कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसैं ।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा ॥
उत्तम आर्जव रीति बखानी, रन्चक दगा बहुत दुखदानी ।
मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सो करिये ॥
करिये सरल तिंहु जोग अपने, देख निरमल आरसी ।
मुख करे जैसा लखे तैसा, कपट प्रीति अन्गारसी ॥
नहीं लहे लछमी अधिक छल करि, करम बन्ध विशेषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहीं देखता ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम शौच

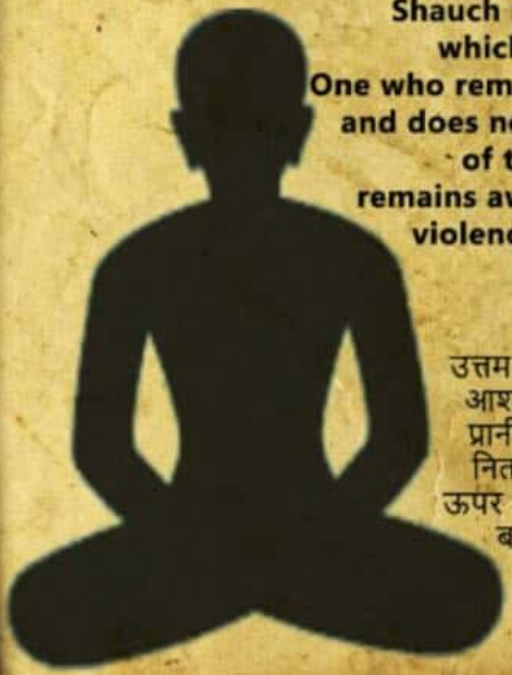

Shauch means 'Holiness' or 'Sacredness' which is attained by contentment. One who remains contented with own possessions and does not wish for the money, glamour etc. of the other, or in other words, remains away from all types of greed, anger, violence etc. realizes Shauch Dharma.

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों ।
शौच सदा निर्दोष, धरम बढो संसार में ॥
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ग्यान ध्यान प्रभावतैं ।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि दोष सुभावतैं ।।
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै ।
बहु देह मैली सुगुन थैली, शौच गुन साधू लहै ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम सत्य

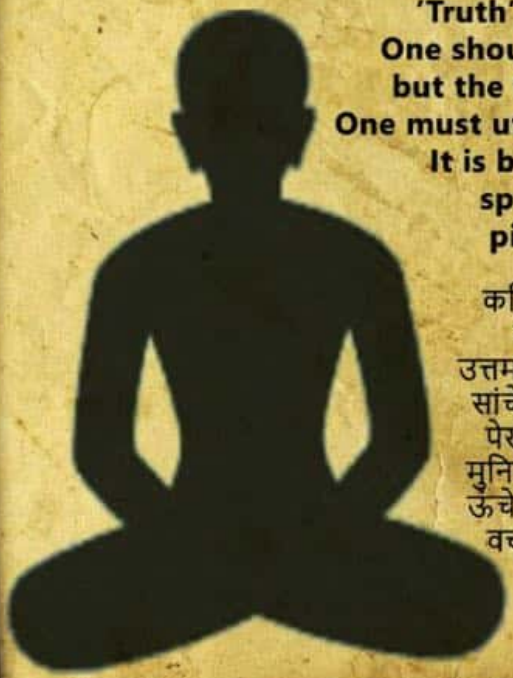

'Truth' is the character of this Dharma.
One should tell only the correct & true fact
but the truth should not be harsh & rude.
One must utter beneficial & pleasant words only
It is better to keep quiet rather than
speaking the truth, which can
pierce the heart of the other.

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज ।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी ॥
उत्तम सत्य बरत पा लीजे, पर-विश्वासघात नहीं कीजे ।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे, को दरब सब दीजिये ।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, सांच गुन लख लीजिये ॥
ऊंचे सिन्हासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया ।
वच झूठ सेति नरक पहुंचा, सुरग में नारद गया ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम संयम

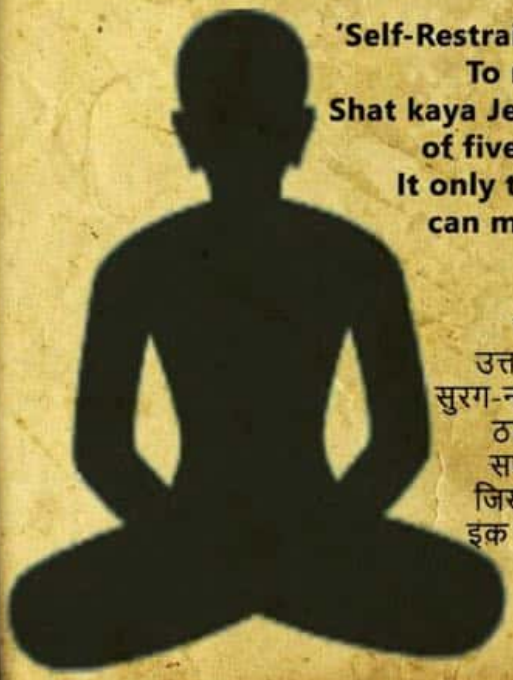

**'Self-Restraint' is the character of this Dharma.
To refrain from the violence of
Shat kaya Jeevas and from the sensual pleasures
of five sense define Sanyam Dharma.
It only the self-restraint with Samyaktva
can make the human-life successful.**

काय छहों प्रतिपाल, पंचेंद्री मन वश करो ।
सन्जम रतन संभाल, विषय चोर बहु फ़िरत हैं ॥
उत्तम सन्जम गहु मन मेरे, भव-भव के भांजै अघ तेरे ।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं,आलस-हरन करन-सुख ठाहीं ॥
ठाहीं पृथी जल आग मारूत, रुख त्रस करुना धरो ।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥
जिस बिना नहि जिनराज सीझे, तु रुल्यो जग-कीच में ।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम-मुख बीच में ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम तप

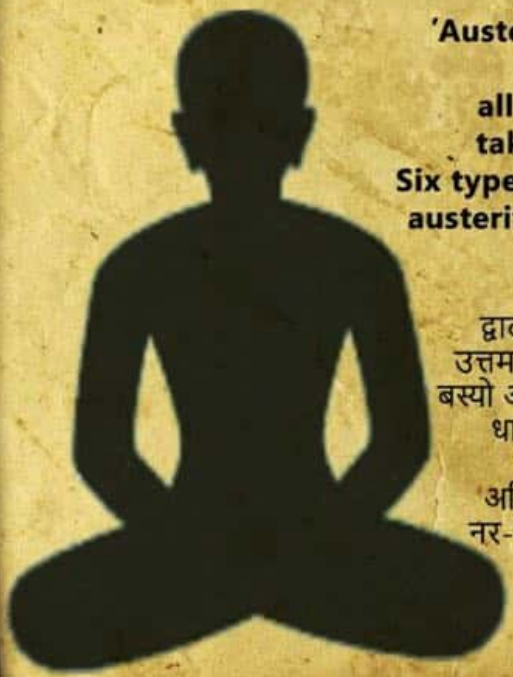

**'Austerities' characterize Tapa Dharma.
One who wants to destroy
all the Karmas bound to the soul
takes the shelter of Tapa Dharma.
Six types of external & six types of internal
austerities have been mentioned for Jains.**

तप चाहें सुरराय, करम-शिखर को वज्र है ।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम ॥
उत्तम तप सबमाहिं बखाना, करम शैल को वज्र-समाना ।
बस्यो अनादि-निगोद मन्झारा, भू-विकलत्रय-पशु-तन धारा
धारा मनुज तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता ।
श्रीजैनवानी तत्वग्यानी, भई विषय-पयोगता ।।
अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरैं ।
नर-भव अनूपम कनक घर पर मणिमयी कलसा धरैं ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम त्याग

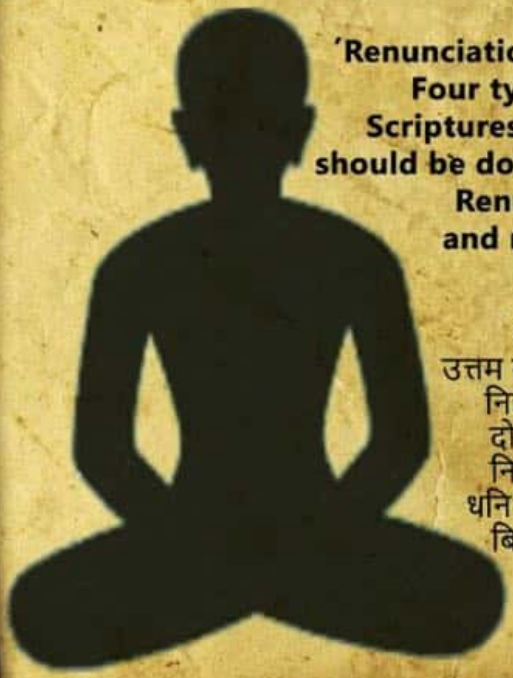

**'Renunciation' is the character of Tyag Dharma.
Four types of Dann - Food, Medicines
Scriptures and Place (for removing the fear)
should be donated by a Shravak to the Jain Saints.
Renunciation of the attachment
and malice both lead to salvation.**

दान चार परकार, चार सन्घ को दीजिए ।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए ॥
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा ।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ग्याता दोनों दान संभारै ॥
दोनों सम्भारै कूप-जलसम, दरब घर में परिनया ।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया ॥
धनि साधु शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को ।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व -उत्तम आकिंचन्य

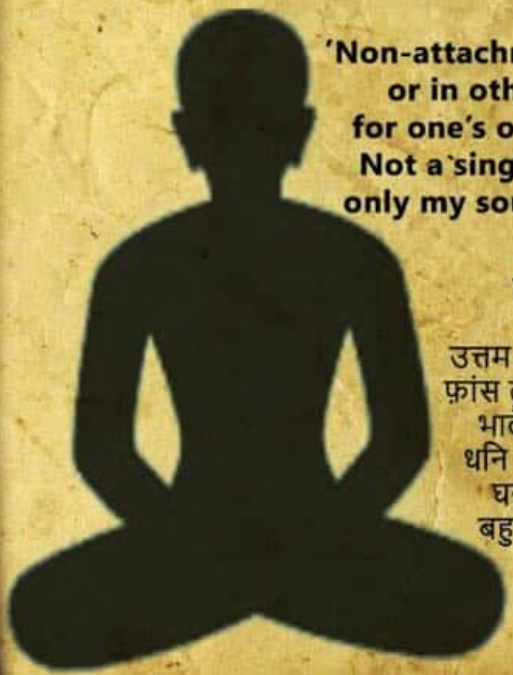

'Non-attachment' is the character of this Dharma or in other words, not taking the non-self for one's own self defines Akinchanya Dharma. Not a single particle in three Lokas is of mine only my soul is of my own or I am the soul only.

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराज जी ।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिंता दुख ही मानो ।
फ़ांस तनक-सी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं ।
धनि नगन पर तन नगन ठाडे, सुर-असुर पायनि परैं ॥
घरमाहिं तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसार सौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं ॥

Scanned by CamScanner

दसलक्षण महापर्व - उत्तम ब्रहमचर्य

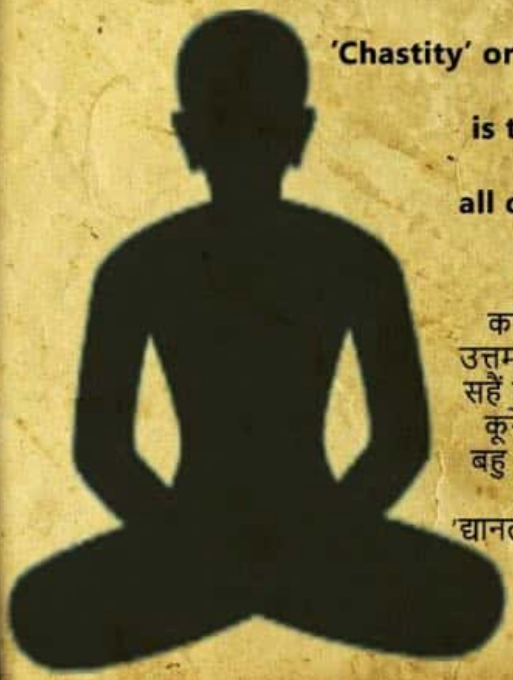

'Chastity' or 'Celibacy' characterizes this Dharma.
To be stable in own soul
is the real form of this Dharma.
Without Brahmacharya
all other qualities are of no avail.

शील-बाढ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो ।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफ़ल नरभव सदा ॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता-बहिन-सुता पहिचानौ ।
सहैं वान-वरषा बहु सूरे, टिकैं न नैन-वान लखि कूरे ॥
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करै ।
बहु मृतक सडहिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं ॥
संसार में विषबेलनारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरम दशपैंडि चढि कैं, शिवमहल में पग धरा ॥

Scanned by CamScanner